प्रथम अध्याय

परिचय

प्रस्तावना

अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन के उद्देश्य

शोध प्रश्न

शोध का परिसीमन

प्रथम अध्याय

परिचय

1.1 प्रस्तावना –

हर किसी अवचेतन मन में ज्ञान के प्रति रूचि तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति क्षमता विकसित करने में शिक्षण विद्या की महती भूमिका होती है। शिक्षण के विभिन्न चरणों में ज्ञान की विभिन्नताओं का यथा स्थान समावेश नितांत आवश्यक होता है।

अनुशासन सुशासन की निरंतरता को बनाये रखने वाला परमावश्यक तत्व है। व्यवहार में वांहित परिवर्तन लाने हेतु तथा व्यक्ति विशेष की दक्षताओं एवं प्रवीणताओं में निखार लाने अनुशासन की परिसीमा निर्धारित की जाती है जिसे लांधने में जीवन कष्टपरक तो होता ही है, अपितु अबूझ विषमताओं के जाल में तब्दील हो जाता है।

'अनुशासन' एक ऐसा पद है जिसे विभिन्न अर्थो में प्रारंभ से ही लोगों ने प्रयोग किया है। 'अनुशासन' पद का अँगरेजी रूपान्तर Discipline है जो Disciple से बना है तथा Disciple का अर्थ होता है शिष्य या चेला। शिष्य अपने गुरू से उन तरीकों, नियमों एवं विधियों को सीखाता है जिनसे उसकी जिन्दगी में खुशी एवं कर्तव्यनिष्ठा का गुण विकसित हो सके। इस अर्थ में हॉफमैन ने अनुशासन को परिभाषित करते हुए कहा है कि सामाजिक समूह द्धारा अनुमोदित नैतिक व्यवहार को बालकों को सिखाना ही अनुशासन है।

सचमुच अनुशासन का आज जो अर्थ शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने लगा रखा है वह पहले के अर्थ से काफी भिन्न है। अतः, यह आवश्यक है कि अनुशासन के स्वरूप को समझने के लिए उसकी व्याख्या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में की जाए। 19वीं शताब्दी में अनुशासन का अर्थ शिक्षक दण्ड एवं सख्ती से लगाते थे। जब भी वे बालकों को अनुशासित करने की बात करते थे, तो वे बालकों को दण्ड देते थे तथा उनके साथ सख्ती से पेश आते थे। अतः, उस समय अनुशासन का अर्थ दण्ड एवं सख्ती था। शिक्षकों का मत था कि दण्ड देने एवं

सख्ती बरतने से छात्रों का दुर्व्यवहार समाप्त हो जाएगा और वे ठीक ढंग से व्वहार करेंगे।

20 वीं शताब्दी के आरंभ में प्रगतिशील शिक्षा आंदोलन प्रारंभ हुआ जिसके अनुसार दण्ड एवं सख्ती को समस्यात्मक व्यवहार का कारण न कि समाधान माना जाने लगा। इस आंदोलन का मुख्य विचार यह था कि दण्ड से बालकों में डर उत्पन्न होता है और डर से उनमें विभिन्न तरह की बचाव प्रतिक्रियाएँ शुरू हो जाती हैं इससे फिर बालक दण्ड के भागी बन जाते हैं। अतः, दण्ड के इस दूषित चक्र को तोड़कर अनुशासन को कुछ धनात्मक पहलुओं के आधार पर परिभाषित करने की कोशिश की गई। वैसे शिक्षक जो प्रगतिशील शिक्षा आन्दोलन के समर्थक थे, का कहना था कि छात्रों को पर्याप्त स्वतंत्रता अनुज्ञात्मकता तथा अभिरूचि प्रदान करनेवाली परिस्थिति में रखना चाहिए। इन समर्थकों में फ्राबेल पेस्टालॉजी एवं माण्टेसरी आदि का नाम अधिक उल्लेखनीय है। इन लोगों का मत है कि बालकों को उचित अनुशासन तथा शिक्षा के लिए उन्हें एक ऐसे वातावरण में रखना आवश्यक है जहाँ उन्हें पूरी स्वतंत्रता हो तथा जहाँ वे अपनी अभिरूचि के अनुसार समस्याओं का समाधान कर सकें। इस विचारधारा की पूर्वकल्पना यह थी कि बालक मूलतः अच्छे स्वभाव के होते हैं जिन्हें अनुशासित करने के लिए उनपर किसी प्रकार की सख्ती की जरूरत नहीं होती बल्कि एक स्वतंत्र एवं खुले वातावरण की जरूरत होती है जहाँ वे अपनी इच्छा एवं अभिरूचि के अनुकूल कार्य कर सकें तथा कुछ सीख सकें। इस ढंग की परिस्थिति होने से छात्र कोई अनुशासनहीनता की समस्या नहीं खड़ी करेंगे और वे स्वयं ही अनुशासित हो जाएँगे।

परंतु, आधुनिक शिक्षा मनोवैज्ञानिकों को उपर्युक्त दोनों ही विचारधाराएँ (19वीं शताब्दी एवं 20वीं शताब्दी के आरंभ की) मान्य नहीं हैं और इन्होंने अनुशासन को एक-दूसरे ढंग से परिभाषित करने की कोशिश की है। रिली तथा लेविस ने अनुशासन की एक अति आधुनिक एवं विस्तृत परिभाषा दी है जिससे करीब-करीब सभी आधुनिक शिक्षा मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने अपनी सहमति व्यक्त की है। इनके अनुसार, "कक्षा में व्यवहार-संबंधी समस्याओं से निपटना तथा उसका निवारण करना ही अनुशासन है।... वर्तमान

समय में अनुशासन से तात्पर्य नियंत्रण (विशेषतः आत्मनियंत्रण), बोध, उद्देश्य–उन्मुखी, निर्देशात्मक, निवारण एवं संगठित उदात्तीकरण से होता है।''

इस परिभाषा का विश्लेषण करने पर हमें अनुशासन के स्वरूप के बारे में निम्नांकित मुख्य तथ्य प्राप्त होते है–

(i) अनुशासन में मुख्य मुद्दा व्यवहार–संबंधी समस्यायें होती हैं।

(ii) इसमें ऐसी समस्याओं से निपटने एवं उन्हें रोकने की पर्याप्त कोशिश की जाती है।

(iii) अनुशासनका संबंध छात्रों में आत्मनियंत्रण की क्षमता विकसित करने से होता है।

(iv) अनुशासान में बालकों के व्यवहारों, उनके प्रमुख अभिप्रेरकों भावनाओंएवं अभिरूचियों को समझने की कोशिश की जाती है ताकि आसानी से उनकी समस्याओं को समझा जा सके। यथासंभव छात्रों को नियमों, अनुशासनात्मक कार्यो, अधिनियमों के बचने के कारणों की भी समझ या बोध होनी चाहिए ।

(v) अनुशासननिर्देशात्मक होता है। इसका मतलब यह हुआ कि अनुशासन भंग करनेवाले छात्रों को प्रायः किसी मनोवैज्ञानिक, परामर्शदाता तथा विशेषज्ञ के पास उनके व्यवहार–संबंधी समस्याओं के निराकरण के लिए भेजा जाता है। इसके पीछे पूर्वकल्पना यह होती है कि छात्र के ऐसे व्यवहारों का कोई न–कोई कारण अवश्य ही होगा।

(vi) अनुशासन में निवारण की अहमियत होती है। शिक्षक छात्रों को उचित स्नेह देकर, अच्छा अध्याय करके तथा उनकी आवश्यकताओं एवं अभिरूचियों को समझकर उनके व्यवहार–संबंधी समस्याओं को उत्पन्न होने से ही रोक सकते हैं।

(vii) अनुशासन में उद्देश्योन्मुखी व्यवहार की भी भूमिका होती है। शिक्षक यदि प्रत्येक छात्र की आवश्यकता के अनुरूप उसके लक्ष्य से उसे अवगत करा देते हैं और उस लक्ष्य पहूँचने के लिए पर्याप्त पथ प्रशस्त कर देते हैं, तो इससे स्वभावतः छात्र में समस्या–संबंधी व्यवहार कम जाता है और छात्र. अनुशासित हो जाते हैं।

(viii) अनुशासन का संबंध संगठित उदात्तीकरण से भी होता है। संगठित उदात्तीकरण से तात्पर्य स्कूल के समय को इस ढंग से नियोजित करने से होता है कि सभी छात्रों का अन्तोंदया अभिप्रेरण की अभिव्यक्ति अनुमोदित तरीकों से हो सके। दूसरे शब्दों में, स्कूल के समय को इस ढंग से सुनियत करना चाहिए कि छात्र हमेशा व्यस्त रहें और उनके पास किसी तरह के समस्यात्मक व्यवहार करने का न तो समय हो और न ही शक्ति।

(ix) स्पष्ट हुआ कि अनुशासन का स्वरूप बहुविमीय है तथा आधुनिक शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अनुशासन एक इतना व्यापक पद है कि इसमें कई तरह के तथ्य सम्मिलित हैं।

अनुशासनके उद्देश्य एवं लक्ष्य

आधुनिक शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अनुशासन के मुख्य उद्देश्य एवं लक्ष्य निम्नांकित हैं–

आत्मनियंत्रण की क्षमता विकसित करना – अनुशासन का सबसे मुख्य उद्देश्य बालकों में आत्म–नियंत्रण की क्षमता उत्पन्न करना है। इसके अभाव में छात्र तरह–तरह के समस्यात्मक व्यवहार जैसे चोरी करना, लड़ाई करना, धोखेबाजी करना आदि सीखकर अनुशासनहीनता की समस्या खड़ी कर देते हैं। अतः, अनुशासन का मुख्य उद्देश्य बालकों में आत्म–नियंत्रण का शीलगुण विकसित करना होता है तथा उन्हें आत्म–अनुशासित कर देना होता है ताकि वे अपने–आपको इस योग्य बना सकें कि वातावरण की आवश्यकता के अनुसार एवं समाज के मानकों के अनुकूल व्यवहार करने में हर परिस्थिति में सक्षम हों।

(ii) **व्यवहार–संबंधी सस्याओं का निवारण–** अनुशासन का एक उद्देश्य छात्रों की व्यवहार–संबंधी समस्याओं का निवारण करना है। कक्षा में शिक्षक छात्रों के सामने अच्छी सामग्रियों को समझने लायक भाषा में उपस्थित कर तथा उनकी आवश्यकताओं एवं अभिरूचि के अनुरूप व्यवहार करके उनमें किसी प्रकार की शरारत या व्यवहार–संबंधी समस्या उत्पन्न करने का मौका ही नहीं देते।

Original Artist
production rights obtainable from
ww.CartoonStock.com

"Luck is when good classroom management skills meets a day when the disruptive student are absent."

(iii) **उदार मनोवृत्ति का विकास–** आधुनिक समय में अनुशासन का उद्देश्य छात्रों में स्कूल के अधिकारियों एवं शिक्षकों के प्रति तथा माता–पिता के प्रति उदार मनोवृत्ति विकसित कर सके। अतः, आजकल छात्रों को अनुशासित करने का एक लक्ष्य यह भी रहता है कि इन लोगों द्वारा दिए गए सुझावों, आदेशों एवं परामर्शों को स्वेच्छा से मानकर वे उनके अनुकूल व्यवहार करने लगें।

(iv) **छात्रों में उत्तम आचरण उत्पन्न करना** अनुशासन का उद्देश्य छात्रों में एक ऐसा आचरण एवं तौर–तरिका सिखाना होता है कि वे कक्षा के बाहर एवं भीतर दोनों ही परिस्थितियों में एक अनुशासित छात्र के रूप में देखे जा सकें। उन्हें अन्य–अन्य लोगों द्वारा एक आदर्श मॉडल के रूप में देखा जा सके।

(v) **छात्रों की वास्तविक जिन्दगी में खुशी उत्पन्न करना एवं उत्तम समायोजन करने में मद्द करना–** –रिली के अनुसार आधुनिक स्कूल में किए जा रहे अनुशासन–संबंधी प्रयासों का एक उद्देश्य छात्रों की प्रमुख आवश्यकताओं एवं अभिरूचियों के अनुरूप व्यवहार कर उन्हें अपने वातावरण के साथ उत्तम समायोजन करने में मदद करना है। जब छात्र उत्तम समायोजन कर पाते हैं तो इससे उन्हें खुशी मिलती है और वे और भी अधिक उत्तम समायोजन करने के लिए प्रेरित होते हैं।

स्पष्टतः अनुशासन का उद्देश्य एवं लक्ष्य में आत्मनियंत्रण एवं आत्म–अनुशासन का गुण पैदा करके उन्हें एक सफलीभूत जीवन व्यतीत करने में मदद करना होता है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता–

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की महत्ता निर्विवाद है। शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक अंधकार को प्रकाश में बदलती है उसका सर्वांगीण विकास करती है किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के उत्थान हेतु आवश्यक आधारों में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है।

व्यक्ति विद्यालय में जब शिक्षा प्राप्त करने के लिये जाता है तो उसे वहाँ एक विशेष व्यवस्था के तहत ही शिक्षा प्रदान की जाती है। किसी भी विद्यालय में शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि यह व्यवस्था सुचारू रूप से बनी रहे। शैक्षिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिये 'अनुशासन' की आवश्यकता पडती है। किसी भी विद्यालय में एक Code of ethics बनाया जाता है जिसका हर छात्र को पालन करना होता है यदि छात्रों द्वारा उसका पालन नहीं किया जाता तो उनका व्यवहार अनुशासनहीनता के दायरे में आ जाता है इससे जहाँ शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं होती वहीं समय का अपव्यय, अशांति, तनाव (गुरू शिष्य के संबंधों में, माता–पिता और संतान के संबंधों में) जैसी समस्याओं का प्रादुर्भाव होता है।

एक अनुशासित छात्र आगे चलकर समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। ऐसा नागरिक जो केवल अपने अधिकारों की बात ही नहीं करता बल्कि अपने कर्त्तव्यों का भली–भाँति पालन करना भी जानता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन का होना बहुत से विकास का मूलाधार है।

शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी कक्षा में अनुशासनहीनता एवं गंभीर समस्या है इससे विद्यार्थियों में मूल्यों का सही विकास नही होता, किसी भी बात को हल्के तौर पर लेने की गलत आदत उनमें उत्पन्न हो जाती है, अगर शिक्षक अनुशासनहीनता को रोकने के लिये कोई Disciplinary action लेता है तो गुरू–शिष्य संबंध की कड़ी कमजोर हो जाती है, प्रारंभिक विद्यालय में ही अनुशासनहीनता की समस्या पर अंकुश न लगाया जाये तो विश्वविद्यालय स्तर तक यह समस्या

HAOS

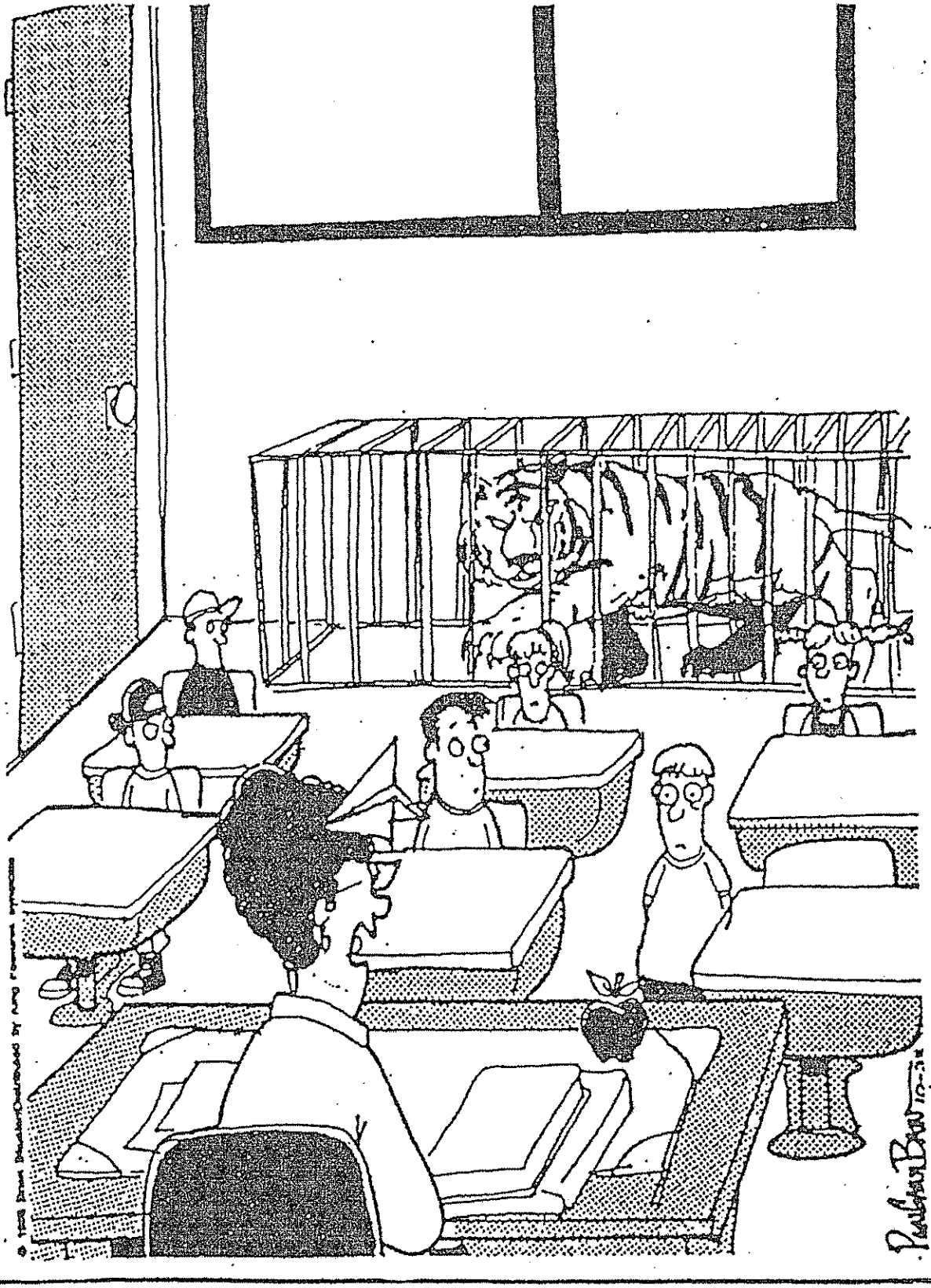

Well, Tim _y, it looks like you've just earned yourself 10 minutes in the cage with Mr. Whiskers."

विकराल रूप ले लेती है। कुछ वर्ष पूर्व उज्जैन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सबरवाल की हत्या इसी समस्या का दुखद परिणाम है।

अतः शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी कक्षा में अनुशासनहीनता क्यों होती है, उसके क्या संभावित कारण है, उसके उपचार क्या हो सकते है इनको जानने के लिये यह अध्ययन महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

अनुशासनहीनता अपने-आप में एक विस्तृत अवधारणा है, जब हम बात कक्षा में अनुशासनहीनता की कर रहे है तो कक्षा में छात्रों का ऐसा व्यवहार जिससे अध्ययन- अध्यापन प्रभावित हो, अभीष्ट शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति कठिन हो जाये, कक्षा की उत्तरोत्तर प्रगति में बाधा उत्पन्न हो जाये, अनुशासनहीनता के दायरे में आता है।

वास्तव में किसी भी व्यक्ति का अनुशासित व्यवहार उसके रहने वाले समाज की सांस्कृतिक प्रणाली से संबद्ध होता है। कोई कार्य उसे करने वाले व्यक्ति की दृष्टि में सही ठहराया जा सकता है परंतु समाज अपनी संस्कृति के अनुसार बताता है कि अमुक स्थान पर व्यक्ति का किस प्रकार आचरण होना चाहिये, यदि उस व्यक्ति का आचरण अमर्यादित (अर्थात् मर्यादा के विपरीत) होगा तो उसे अनुशासनहीनता माना जायेगा। इसी तरह कक्षा में विद्यार्थियों का अमर्यादित आचरण ही अनुशासनहीनता है। इस अनुशासनहीनता के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं:-

1. शिक्षक द्वारा जब पाठ को Explain किया जा रहा हो, तब ध्यान न देना।
2. शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछने पर जानबूझकर जबाव नहीं देना, उसे परेशान करना।
3. शिक्षक द्वारा जब कोई सवाल बनाने को कहा जाये तो उसे हल करने के बजाय बातें करना।

4. शिक्षक द्वारा stimulus variation method का प्रयोग करने पर अकारण हँसना।

5. जब शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखने लगे तो सीटी बजाना, दूसरों को तंग करना।

6. शिक्षक द्वारा Attendance लेने पर शोर करना।

7. कक्षा में अकारण अनुपस्थित रहना, देर से आना, समय-समाप्ति के पूर्व ही कक्षा से भाग जाना।

8. गृहकार्य करके नहीं आना।

9. कक्षागत सामग्री जैसे टेबल, कुर्सी, पंखे, बल्ब आदि में तोड़-फोड़ करना।

© Original Artist
Reproduction rights obtainable from
www.CartoonStock.com

उद्देश्य (Objectives)

1. कक्षा में अनुशासनहीनता के विभिन्न आयामों तथा कारकों का अध्ययन करना।
2. गृह-कार्य की वजह से उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना।
3. कक्षा की शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन के दौरान होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों के घर के Teaching-learning वातावरण का कक्षा अनुशासन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. कक्षा में छात्रों की संख्या के परिणामस्वरूप अनुशासन संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना।

© Original Artist
Reproduction rights obtainable from
www.CartoonStock.com
search ID: epa1545

SORRY I'M LATE BUT MY MOM AND DAD HAD A FIGHT AND I HAD TO REFEREE.

अनुशासन के प्रकार

नारमन मैक्मन ने अपनी रचना'' दी चाइल्ड्स पॉथ टू फ्रीडम'' के अंतर्गत विद्यालय व्यवस्था' की तीन विधियों का विश्लेषण किया है जो इस प्रकार है –

(1)दमनवादी (रिप्रेसननिस्टिक) विधि –

इसमें दण्ड की बहुलता होती है। इसके अंतर्गत अपवर्ती या कष्टदायक उद्दीपकों के अनुप्रयोग द्वारा बालक में यथ उत्पन्न किया जाता है और उसकी उन स्वाभाविक प्रवृत्तियों का दमन कर दिया जाता है जिन्हें वयस्क अपने मानदण्ड के अनुकूल नही पतास है। दमनवादी विधि की धारणा को समर्थन प्रदन करने में वह जीवन दर्शन कारगर रहा है जिसके तहत यह माना जाता है कि बालक स्वभाव से ही पाप़ी होता है तथा जि उसके इस पायी (सिनफुल) प्रवृत्ति को समाप्त करने हेतु कठोर दण्ड की व्यवस्था परमावध्यक है। इसीलिये स्पेअर द रॉड एण्ड स्पाव्यल द चाइल्ड की उक्ति स्कूलों के शिक्षकों में बहुत अरसे तक चर्चित रही है।

(2) प्रभाववादी (अम्प्रेसनिष्टक) विधि–

इसमें शिक्षक के व्यक्तित्व को महत्व दिया जाता है। इसके तहत सदाचरण, आदर्श एवं व्यक्तिगत प्रभाव के माध्यम से उदाहरण द्वारा अनुशासन कायम करने की संस्तुति की जाती है। इस विधि की मुख्य विशेषता यह है कि बालक में अनुशासन लाने के लिये भय का आतंकपूर्ण वातावरण के बजाय आदर, प्रेम, विश्वास की सहज अभिव्यक्ति विकसित करने पर जोर दिया जाता है।

(3) मुक्तिवादी (इमेनिसिपेशनिस्टिक) विधि –

इसमें किसी प्रकार के बाह्य नियंत्रण दबाव या दमन के लिये स्थान नहीं होता है। इसके अंतर्गत अपार स्वतंत्रता या निर्बाध उन्मुक्ता पर बल दिया जाता है, जिससे बालक अपनी स्वाभाविक क्षमता के अनुसार पूर्णता, की ओर उन्मुख हो सके। इस विधि की प्रमुख विशेषता है कि इसके तहत शिक्षक का रोल नियंत्रक या पथ प्रदर्शक का न होकर एक प्रेक्षक का होता

© Original Artist
Reproduction rights obtainable from:
www.CartoonStock.com

Search ID: aban297

"Before I begin today's lesson, please turn off your cell phones, beepers, and iPods."

है जो बिना किसी बाहन हस्तक्षेप के बालक के नैसर्गिक विकास की प्रकिया को देखता रहता है।

कहता न होगा कि अनुशासन कायम करने की इन तीनों विधियों की अपनी सीमायें है। जहॉ दमनवादी विधि पर अब प्रतिबंध लगा दिया गया है और इस अमनोवैज्ञानिक घोषित कर दिया गया है वहॉ मुक्तिवादी पद्धति में गैर जिम्मेदारायन श्री गंध पायी गई है। वस्तुतः शिक्षा की औपचारिक एवं निरोपचारिक (फार्मल या नान फार्मल दोनों प्रकार की व्यवस्थाओं में दमयनवादी एवं युक्तिवादी विधियों अवलंब लेकर उन्हें पूर्णतः लक्ष्योन्मुख रखना संभव नहीं होगा। इसीलिये प्रभाववादी धारणा का सम्बल प्राप्त कर शिक्षा की प्रक्रिया में पथ-प्रदर्शनप, प्रभाव एवं अंतक्रियात्मक संबंधों को निर्मित करने के प्रति विशेष पहल की जाती है।

स्वतंत्रता एवं अनुशासन का शिक्षा में सापेक्षिक महत्व –

सदियों से हमारी देशी एवं विदेशी अनेकानेक शिक्षा प्रणालियों के तहत इन दोनों धारणाओं को अपनाने के प्रति प्रायः एक दूसरे के विरोधी मत व्यक्त किये गये है। हमें इस बात को हमेशा स्मरण रखना होगा कि जहॉ प्रकृतिवादी दर्शन 'स्वतंत्रता' की धारणा को महत्व देता है, वहॉं विचारवादी दर्शन अनुशासन विशेष तौर से उसकी प्रभाववादी विधि को अपनाने की संस्तुति करता है किंतु शिक्षा, शिक्षण एवं जीवन की समस्त प्रकियाओं में न तो पूर्ण रूपेण अटूट स्वतंत्रता की गुंजाइश है और न ही घोर अनुशासनवादी अभियान की। इन दोनों के मध्य एक प्रकार के संतुलन रखने की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता । इस संबंध में शिक्षक के लिये 'नैश' का अधोलिखित वस्तु विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है–

''यदि शिक्षक छात्र को अधिक मार्गदर्शन तथा नेतृत्व प्रदान करता है, उसे अपेक्षित जानकारी से कहीं अधिक बताता है तथा उस पर अपना अकाट्य एवं बोझिल प्रभुत्व कायम करता है, तो ऐसी दशा में वह अपने को ऐसे रास्ते पर ले जाता है जिस पर चलने से सूर्य का प्रकाश उसके नेत्रों में सीधे प्रवेश करता है जिससे वह अंधत्व आगे बढ़ता है और अपने निजी तौर पर कोई मार्ग नहीं ढूढ

पाता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक कोई मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता या किसी प्रकार का नेतृत्व नहीं देता या बालक को कुछ नहीं बताता तथा बिना किसी सहायता के अपना मार्ग स्वयं ढूंढने के लिये विवश कर देता है तो इस दिशा में भी छात्र अपने को उसी प्रकार के मार्ग पर पाता है किंतु इस समय वह घोर अंधकार में होता है, उसे तनिक भी प्रकाश किरण नहीं मिल पाती जिससे वह आगे देख सके।''

कहने का अभिप्राय यह है कि जरूरत से ज्यादा अनुशासन या अंकुशवादिता तथा किसी सीमा–विशेष से अधिक की स्वतंत्रता या निरंशुकता व्यक्ति को अपने सही मार्ग के चुनने, उसपर चलने तथा अपने लक्ष्य पहुंचने में बाधक सिद्ध हो सकती है 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' अर्थात् किसी प्रकार की अतिशयता पर रोक लगा देना चाहिये हमारी कोशिश होनी चाहिये कि विद्यालय में या विद्यालय के बाहर छात्र पर न तो अधिक बाहन अनुशासन का संदेश दिया जाये या किसी तरह का प्रतिबंध या कृत्रिम रूकावट ऊपर से लगायी जाय और न उसे इतनी आजादी या उन्नमुक्ता उपलब्ध हो कि वह जो चाहे सो कर सकता है कि स्थिति में पड जाये। वास्तविक अनुशासन बाहरी शक्तियों द्वारा न उत्पन्न होकर व्यक्ति की आंतरिक प्रेरणा से विकसित होता है। अस्तु, अनुशासन को कोई बाहर से थोपी हुई भावना का रूप न देकर अंदर से जगाई हुई सहज प्रवृत्ति का ही नाम देना अधिक न्याय संगत होगा। इस प्रकार अनुशासन को व्यक्ति द्वारा अपनी आंतरिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का अद्भुत साधन भी कहा जा सकता है, तथा इस परिप्रेक्ष्य में अनुशासन पहले आयेगा तथा स्वतंत्रता बाद में। इसी सम्प्रत्यय को अमली जामा पहनाने के लिये हमें शिक्षा के हर स्तर पर छात्र तथा शिक्षक दोनों ही वर्गो में अनुशासन के रास्ते को अपनाने तथा उसके माध्यम से अपनी वास्तविक स्वतंत्रता या मुक्ति के लक्ष्य तक पहुंचने के अभियान को तीव्र बनाना होगा।

1.4 शोध प्रश्न –

प्रस्तुत शोध की प्रकृति एवं चयनित चरों को ध्यान में रखते हुये इस शोध हेतु शोध प्रश्नों का निर्माण किया गया है। जो इस प्रकार हैं –

1. क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं का एक प्रमुख कारण विद्यार्थियों द्वारा गृह–कार्य करने में अनियमितता है ?
2. क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्यायें गृह–कार्य की गुणवत्ता से संबंधित है ?
3. क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी समस्याओं का कारण दिये गये गृह–कार्य के मूल्यांकन में पारदर्शिता से संबंधित है ?
4. क्या कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया में अनुशासन संबंधी समस्या का कारण बनती है ?
5. क्या कक्षा में छात्रों की अधिक संख्या कक्षा–प्रबंधन में व्यवधान उत्पन्न करती है ?
6. क्या कक्षा में छात्रों की अधिकता से उत्पन्न अनुशासनात्मक समस्याओं का निराकरण शिक्षक द्वारा किया जा सकता है ?
7. क्या कक्षा में अनुशासन संबंधी उत्पन्न समस्याओं को शिक्षक अपने शिक्षण–कौशल से नियंत्रित कर सकता है ?
8. कक्षा में अनुशासन संबंधी उत्पन्न समस्याओं में छात्रों की शैक्षिक–पृष्ठभूमि का किस सीमा तक योगदान है ?
9. क्या विद्यालयीन प्रशासन कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति सजग है ?
10. विद्यालयीन प्रशासन का कक्षा में उत्पन्न होने वाली अनुशासन संबंधी समस्याओं के प्रति क्या दृष्टिकोण है ?

© Original Artist
Reproduction rights obtainable from
www.CartoonStock.com

Search ID: aba0563

"For throwing spitballs in class, I am sending you to the principal's office. It's nothing personal. It's just a classroom management thing."

शोध का परिसीमन (Limitations)

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध–

1. कक्षागत अनुशासन संबंधी समस्याओं तक सीमित होगा।
2. कक्षा नवमीं एवं दसवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समस्याओं तक सीमित किया जायेगा।
3. आँकडों के संग्रहण हेतु माध्यमिक स्तर के शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों का ही चयन किया जायेगा।